IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, S.Iss 06, 2022

व्याख्यात्मक आलोचना को संदर्भ में रविन्द्रनाथ टैगोर की दिव्यांग रचना 'भिखारिन' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

–डॉ. ओम मिश्र
–शरद कुमार मिश्र

यह रचना एक उच्चकोटि की दिव्यांग वृद्ध महिला के जीवन पर आधारित रचना है। वह चक्षु–दिव्यांग है और समाज में व्यवस्थित कार्य न मिल पाने के कारण उसने भीख मांगने का कार्य शुरू किया। यदि दिव्यागों की दिव्यांगता, उनके अंगों की दिव्यांग क्षमता को परखा जाये तो अवश्य ही उनकी दिव्यांगता का समाजोपयोगी पक्ष उभर कर सामने आ जाए। 'भिखारिन' रचना में दिव्यांग वृद्धा ने अपने जीवन को चलाने के लिए एक जून रोटी की व्यवस्था के लिए एक मन्दिर के सामने बैठना शुरू कर दिया। जहाँ आने–जाने वाले लोग उसे कुछ पैसे दे देते जिससे उसकी रोजी–रोटी चल जाती। चक्षु दिव्यांगता होने के कारण भी उसने अपनी दिव्य क्षमता से अनुमान लगा लिया था कि इस मंदिर में आने वाले सहृदय उसे एक–आध रुपये पैसे अवश्य देंगे–''एक अंधी बुढ़िया प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी हो जाती, दर्शन करने वाले बाहर निकलते तो वह हाथ फैला देती और नम्रता से कहती–यह रचना एक उच्चकोटि की दिव्यांग वृद्ध महिला के जीवन पर आधारित रचना है। वह चक्षु–दिव्यांग है और समाज में व्यवस्थित कार्य न मिल पाने के कारण उसने भीख मांगने का कार्य शुरू किया। यदि दिव्यागों की दिव्यांगता, उनके अंगों की दिव्यांग क्षमता को परखा जाये तो अवश्य ही उनकी दिव्यांगता का समाजोपयोगी पक्ष उभर कर सामने आ जाए। 'भिखारिन' रचना में दिव्यांग वृद्धा ने अपने जीवन को चलाने के लिए एक जून रोटी की व्यवस्था के लिए एक मन्दिर के सामने बैठना शुरू कर दिया। जहाँ आने–जाने वाले लोग उसे कुछ पैसे दे देते जिससे उसकी रोजी–रोटी चल जाती। चक्षु दिव्यांगता होने के कारण भी उसने अपनी दिव्य क्षमता से अनुमान लगा लिया था कि इस मंदिर में आने वाले सहृदय उसे एक आध रुपये पैसे अवष्य देंगे–''एक अंधी बुढ़िया प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी हो जाती, दर्शन करने वाले बाहर निकलते तो वह हाथ फैला देती और नम्रता से कहती।"

"बाबूजी! अंधी पर दया हो जाए।"

वह जानती थी कि मंदिर में आने वाले सहृदय और श्रद्वालु हुआ करते हैं। उसका यह अनुमान असत्य न था। आने–जाने वाले दो–चार पैसे उसके हाथ पर रख ही देते। अंधी उनको दुआएँ देती और उनकी सहृदयता को सराहती। स्त्रियाँ भी उसके पल्ले में थोंड़ा–बहुत अनाज डाल जाया करती थीं।''[1]

हालांकि वह अपनी दिव्यांग–क्षमता का पूर्ण उपयोग करती है। मंदिर के पास किसी दिन धन न मिल पाने के कारण वह वापस आते समय भी रास्ते में लोगों से पैसे की याचना करती रहती–''प्रातः से संध्या तक वह इसी प्रकार हाथ फैलाए खड़ी रहती। उसके पष्चात मन–ही–मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी का पथ ग्रहण करती। उसकी झोंपड़ी नगर से बाहर थी। रास्ते में भी याचना करती जाती।''[2]

शारीरिक भिन्नता के बावजूद भी अपने अंदर की दिव्यांग शक्ति के कारण वह अपने जीवन में कभी हताश नहीं होती–''किंतु राहगीरों में अधिक संख्या श्वेत वस्त्रों वालों की होती, जो पैसे देने की अपेक्षा

झिड़कियाँ दिया करते हैं। तब भी अंधी निराश न होती और उसकी याचना बराबर जारी रहती। झोंपड़ी तक पहुँचते–पहुँचते उसे दो–चार पैसे और मिल जाते।''[3]

अपनी दिव्यांगता के कारण वह अपने ह्रदय के कलेजे के समान किसी के खोए हुए बालक को प्राप्त कर, उसकी खूब सेवा करती है। हालांकि वह उसका अपना पुत्र नहीं है। वह उसे उसकी झोपड़ी के पास रोता हुआ मिला था। उसकी सेवा करने में वह उसकी असली माता से भी अधिक सफल सिद्ध होती है–''झोंपड़ी के पास पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का, उछलता–कूदता आता और उससे लिपट जाता। अंधी टटोलकर उसके मस्तक को चूमती। बच्चा कौन है? किसका है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचय नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास–पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था। इन्हीं दिनों एक दिन संध्या–समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा। वह रो रहा था। अंधी उसका मुख चूम–चूमकर उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी। यह कोई असाधारण घटना न थी, अतः किसी ने भी न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से यह बच्चा अंधी के पास था और प्रसन्न था। उसको वह अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती।''[4]

लोगों की सोच है कि दिव्याग लोग दैनिक कार्यों को करने में भी असमर्थ होते है परन्तु ऐसा नहीं है। इस दिव्यांग वृद्ध महिला ने अपने कार्यों से लोगों को आष्चर्यचकित कर दिया। इस चक्षु दिव्यांग वृद्धा में अपने कार्यों को करने की प्रबल क्षमता है। जैसा कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–''अंधी ने अपनी झोंपड़ी में एक हाँडी गाड़ रखी थी। संध्या–समय जो कुछ माँगकर लाती उसमें डाल देती और उसे किसी वस्तु से ढक देती, इसलिए कि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े। खाने के लिए अन्न काफी मिल जाता था। उससे काम चलाती। पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती फिर स्वयं खाती। रात को बच्चे को अपने सीने से लगाकर वहीं पड़ी रहती। प्रातःकाल होते ही उसको खिला–पिलाकर फिर मंदिर के द्वार पर जा खड़ी होती।''[5]

उसे समाज की सारी गतिविधियों की जानकारी रहती है। उसे यह भी पता था कि काशी में एक सेठ रहता है जो लोगों की पूंजी अपने पास जमा कर लेता है। जिससे लोगों की पूंजी उसके पास सुरक्षित रहती है। क्योंकि उस समय बैंक तो कम ही थे इसी कारण लोग, सेठ के पास अपना धन सुरक्षित रख देते थे और समय पढ़ने पर वापस ले लेते थे। इसी विचार से चक्षु दिव्यांग वृद्धा महिला ने अपना भीख मांगकर एकत्र किया गया धन उस सेठ के पास सुरक्षित रखने का विचार बनाया–''काशी में सेठ बनारसीदास बहुत प्रसिद्व व्यक्ति हैं। बच्चा–बच्चा उनकी कोठी से परिचित है। वे बहुत बड़े देशभक्त और धर्मात्मा हैं। धर्म में उनकी बड़ी रूचि है। दिन के बारह बजे तक सेठ स्नान–ध्यान में संलग्न रहते। कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परंतु ऐसे व्यक्तियों का भी तांता बँधा रहता जो अपनी पूँजी सेठजी के पास धरोहर के रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा–पूँजी इन्हीं के पास जमा कर जाते। अंधी को भी यह बात ज्ञात थी, किंतु पता नहीं अब तक वह अपनी कमाई यहाँ जमा कराने में क्यों हिचकिचाती रही। उसे समाज की सारी गतिविधियों की जानकारी रहती है। उसे यह भी पता था कि काशी में एक सेठ रहता है जो लोगों की पूंजी अपने पास जमा कर लेता है। जिससे लोगों की पूंजी उसके पास सुरक्षित रहती है। क्योंकि उस समय बैंक तो कम ही थे इसी कारण लोग, सेठ के पास अपना धन सुरक्षित

रख देते थे और समय पढ़ने पर वापस ले लेते थे। इसी विचार से चक्षु दिव्यांग वृद्धा महिला ने अपना भीख मांगकर एकत्रा किया गया धन उस सेठ के पास सुरक्षित रखने का विचार बनाया–''काशी में सेठ बनारसीदास बहुत प्रसिद्व व्यक्ति हैं। बच्चा–बच्चा उनकी कोठी से परिचित है। वे बहुत बड़े देशभक्त और धर्मात्मा हैं। धर्म में उनकी बड़ी रूचि है। दिन के बारह बजे तक सेठ स्नान–ध्यान में संलग्न रहते। कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परंतु ऐसे व्यक्तियों का भी तांता बँधा रहता जो अपनी पूँजी सेठजी के पास धरोहर के रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा–पूँजी इन्हीं के पास जमा कर जाते। अंधी को भी यह बात ज्ञात थी, किंतु पता नहीं अब तक वह अपनी कमाई यहाँ जमा कराने में क्यों हिचकिचाती रही।''

उसके पास काफी रूपये हो गए थे। हाँडी लगभग पूरी तरह भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई चुरा न ले। एक दिन संध्या–समय अंधी ने वह हाँडी उखाड़ी और अपने फटे हुए आँचल में छिपाकर सेठजी की कोठी पर पहुँची। सेठजी बही–खाते के पृष्ठ उलट रहे थे। उन्होंने पूछा–"क्या है बुढ़िया?"

अंधी ने उत्तर दिया–"भीख माँग–माँगकर अपने बच्चे के लिए दो–चार पैसे जमा किए हैं। अपने पास रखते हुए डरती हूँ। कृप्या इन्हें आप अपनी कोठी में रख लें।"[6]

रचना एक बड़े विमर्श की ओर भी इषारा करती है इस समाज में लोग दिव्यागों को विकलांग[7] भी कहते है और उनका शोषण भी करते है। इस सेठ ने भी उस महिला के धन को डकार लिया। जैसा कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–''दो वर्ष बहुत सुख के साथ बीते। इसके पश्चात एक दिन लड़के को ज्वर ने आ दबोचा। अंधी ने दवा–दारू की, झाड़–फूँक से भी काम लिया, टोने–टोटकों का भी प्रयोग किया, परंतु सभी प्रयत्न व्यर्थ सिद्व हुए। साहस ने जवाब दे दिया, वह निराष हो गई। फिर ध्यान आया कि संभवतः डॉक्टर के इलाज से फायदा हो जाए। इस विचार के आते ही वह गिरती–पड़ती सेठजी की कोठी पर पहुँची। सेठजी उपस्थित थे।''[8]

अपने बालक की दवा कराने के लिए वह सेठ से अपने धन में से 5–10 रुपये मांगती है तो सेठ अजीब प्रकार का अभिनय करता है।

"सेठजी! मेरी जमा–पूँजी में से दस–पाँच? रूपए मुझे मिल जाएँ तो बड़ी कृपा होगी। मेरा बच्चा मर रहा है। डॉक्टरों को दिखाऊँगी।" अंधी ने कहा।

"कैसी जमा–पूँजी? कैसे रूपये? केरे पास किसी के रूपये जमा नहीं हैं।" सेठजी ने कठोर स्वर में कहा।

"दो वर्ष हुए मैं आपके पास धरोहर रख गई थी। दे दीजिए बड़ी दया होगी।" अंधी ने रोते हुए कहा।

सेठजी ने मुनीम जी की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखते हुए कहा–"मुनीम जी! जरा देखना तो इसके नाम की कोई पूँजी जमा है क्या? तेरा नाम क्या है री?"

अंधी की जान–में–जान आई, आशा बँधी। पहला उत्तर सुनकर उसने सोचा कि सेठ बेईमान है, किंतु अब सोचने लगी संभवतः उसे ध्यान न रहा होगा। ऐसा धर्मी व्यक्ति भी भला कहीं झूठ बोल सकता है। उसने अपना नाम बता दिया। अंधी की जान–में–जान आई, आशा बँधी। पहला उत्तर सुनकर उसने सोचा

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, S.Iss 06, 2022

कि सेठ बेईमान है, किंतु अब सोचने लगी संभवतः उसे ध्यान न रहा होगा। ऐसा धर्मी व्यक्ति भी भला कहीं झूठ बोल सकता है। उसने अपना नाम बता दिया।

मुनीम ने बही–खाता उलट–पलट देखा। फिर कहा–"नहीं तो, इस नाम पर एक पाई भी जमा नहीं है।"[9]

यह चक्षु दिव्यांग महिला दिव्यांग गुणों से भरपूर है। वह बीमार बच्चे को बचाने के लिए बहुत प्रयत्न करती है इसके लिए वह सेठ के पास जाकर पुनः गिड़गिड़ाती है। वह इस चक्षु दिव्यांग महिला को अपने दरवाजे से भगाने का प्रयत्न करता है फिर भी वह गिड़गिड़ाती रहती है–''अंधी वहीं जमी बैठी रही। उसने रो–रोकर कहा–"सेठजी! परमात्मा के नाम पर, धर्म के नाम पर कुछ दे दीजिए। मेरा बच्चा जी जाएगा। मैं जीवन–भर आपके गुण गाऊँगी।"

परंतु पत्थर में जोंक न लगी। सेठजी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया–"जाती है या नौकर का बुलाऊँ?

अंधी लाठी टेककर खड़ी हो गई और सेठजी की ओर मुँह करके बोली–"अच्छा भगवान तुम्हें बहुत दें।" और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।''[10]

चक्षु विकलांग महिला की नायिकोचित गुणों का वर्णन करते हुए टैगोर ने स्पष्ट किया है कि चक्षु दिव्यांग लोगों में एक विशेष प्रकार की क्षमता होती है, जैसे लड़के के बीमार होने पर सेठ के द्वारा जब उसे पैसे नहीं मिल पाये तब भी उसने हार नहीं मानी। वह पुनः बीमार बच्चे को लेकर सेठ के दरवाजे पर जाकर बैठ गई–''बैठे–बैठे उसको कुछ ध्यान आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और ठोकरें खाती, गिरती–पड़ती, सेठजी के पास पहुँची। वह उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गई। बच्चे का शरीर ज्वर से भभक् रहा था और अंधी का कलेजा भी।

एक नौकर किसी काम से बाहर आया। अंधी को दरवाजे पर बैठा देखकर उसने सेठजी को सूचना दी। सेठजी ने आज्ञा दी कि उसे भगा दो। नौकर ने अंधी से चले जाने को कहा, लेकिन वह उस स्थान से न हिली। मारने का भय दिखाया, परंतु वह टस–से–मस न हुई। उसने फिर अंदर जाकर कहा कि वह नहीं टलती।''[11]

यहां एक संयोग की था कि सेठ का बेटा सात साल पहले कहीं खो गया था। जो रोते–रोते इस चक्षु दिव्यांग महिला की झोपड़ी के पास पहुंच गया और इस चक्षु दिव्यांग महिला ने उसे अपने ममत्व की ताकत से इतना प्यार दिया की वह लड़का उसे मां से भी अधिक मानने लगा। आज जब वह लड़का बीमार है तो इस चक्षु दिव्यांग महिला ने एक प्रण किया कि वह आज सेठ के दरवाजे से नहीं हटेगी। परिणामस्व रूप सेठ ने स्वयं गेट पर आकर बूढ़ी चक्षु दिव्यांग वृद्धा को भगाने का प्रयत्न किया। परन्तु दरवाजे पर आते ही सेठ ने चक्षु दिव्यांग वृद्धा की गोदी में लेटे बच्चे को देखा उस बच्चे की जांघ खुली हुई थी। बच्चे की जांघ पर एक निशान था। बच्चे की जांघ के निषान को देखकर सेठ एकदम हैरान रह गया क्योंकि एकदम वैसा ही निशान सेठ के सात साल पहले खोए लड़के की जांघ पर भी था। परन्तु यह निषान अब कुछ बड़ा हो गया था। सेठ तुरन्त अपने पुत्रा को पहचान गया तथा उसे लेकर कलेजे से लगा लिया–''सेठजी स्वयं बाहर आए। देखते ही पहचान गए। बच्चे को देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी शक्ल–सूरत उनके मोहन से बहुत मिलती–जुलती है। सात वर्ष पहले मोहन किसी मेले में खो गया था। उसकी बहुत

खोज की, परंतु उसका कोई पता न चला। उन्हें स्मरण हो आया कि मोहन की जाँघ पर एक लाल रंग का चिह्द था। इस विचार के आते ही उन्होंने अंधी की गोद के बच्चे की जाँघ देखी। चिन्ह अवश्य था, परंतु पहले से कुछ बड़ा। उनको विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का है। उन्होंने तुरंत उसको छीनकर अपने कलेजे से चिपटा लिया। शरीर ज्वर से तप रहा था। नौकर को डॉक्टर लाने के लिए भेजा और स्वयं मकान के अंदर चल दिए।''[12]

अब सेठ उस बच्चे के प्राण बचाने के लिए जी–तोड़ मेहनत करने लगा। फिर भी बच्चे का ज्वर शांत नहीं हो रहा था। दूसरे दिन बच्चे की हालत में कुछ सुधार आया तो उसने सबसे पहले अपनी चक्षु दिव्यांग इस वृद्धा मां को ही पुकारा परन्तु इधर–उधर उसे वह नहीं दिखाई दी तो पुनः बच्चे ने अपनी आंखे बंद कर ली। अब सेठ बहुत परेशान हो गया–''सेठजी की अजीब दशा थी। उनको कुछ सुझाई नहीं दे रहा था। कुछ देर वहीं मौन खड़े रहे, फिर मकान के अंदर चले गए। अंधी कुछ समय तक खड़ी रोती रही, फिर वह भी अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

दूसरे दिन प्रातःकाल प्रभु की कृपा हुई या दवा ने जादू के जैसा प्रभाव दिखाया, मोहन का ज्वर उतर गया। होश आने पर उसने आँखें खोली तो सर्वप्रथम शब्द उसकी जुबान से निकला 'माँ'।

चारों ओर अपरिचित लोगों को देखकर उसने अपने नेत्र फिर बंद कर लिए। उस समय से उसका ज्वर फिर अधिक होना शुरू हो गया। माँ–माँ की रट लगी हुई थी। डॉक्टर ने जवाब दे दिया। सेठजी के हाथ–पाँव फूल गए, चारों ओर अँधेरा दिखाई देने लगा। "क्या करूँ? एक ही बच्चा है, इतने दिनों बाद मिला भी तो मृत्यु उसको अपने चंगुल में दबा रही है, इसे कैसे बचाऊँ?"

अचानक उन्हें अंधी का ध्यान आया। पत्नी को बाहर भेजा कि देखो कहीं वह अब तक द्वार पर न बैठी हो, परंतु वह वहाँ कहाँ? सेठजी ने फिटन तैयार कराई और बस्ती से बाहर उसकी झोंपड़ी पर पहुँचे। झोंपड़ी बिना द्वार के थी। वे अंदर गए और जाकर देखा कि अंधी एक फटे–पुराने टाट पर पड़ी है और उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है। सेठजी ने धीरे–से उसको हिलाया। उसका शरीर भी अग्नि की भाँति तप रहा था।''[13]

उस चक्षु दिव्यांग वृद्धा की परवरिश का प्रभाव बच्चे के हृदय पर इतना अधिक पड़ा की वह वक्षु दिव्यांग वृद्ध महिला के बिना एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता था। इस बात को सेठ समझ गया और उसने मन में सोचा कि बिना उस चक्षु दिव्यांग महिला के आये बच्चा ठीक नहीं हो सकता। इसलिए वह चक्षु दिव्यांग महिला को बुलाने के लिए उसकी झोपड़ी तक गया और बोला–''सेठजी ने कहा–"बुढिया! तेरा बच्चा मर रहा है। डॉक्टर निराष हो गए हैं, रह–रहकर वह तुझे पुकारता है। अब तू ही उसके प्राण बचा सकती है। चल और मेरे–नहीं–नहीं अपने बच्चे की जान बचा ले।"

अंधी ने उत्तर दिया–"मरता है तो मरने दो। मैं भी मर रही हूँ। हम दोनों स्वर्ग–लोक में फिर माँ–बेटे की तरह मिल जाएँगे। इस लोक में सुख नहीं है। वहाँ मेरा बच्चा सुख से रहेगा। मैं वहाँ उसकी सुचारू रूप से सेवा सुश्रूषा करूँगी।"[14]

इस चक्षु दिव्यांग महिला में नायिकोचित गुणों का भंडार है और वह ममता की मूर्ति भी है क्योंकि बीमार बच्चे को वह ठीक होते देखना चाहती थी जैसे ही सेठ रोने लगा तो उसके हृदय में बच्चे के प्रति

 © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

प्रेम उमड़ आया–''सेठजी रो दिए। आज तक उन्होंने किसी के सामने सिर नहीं झुकाया था, लेकिन इस समय अंधी के पाँवों पर गिर पड़े और रो–रोकर कहा–"ममता की लाज रख लो। आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो तुम्हारे जाने से वह बच जाएगा।"

ममता शब्द ने अंधी को विकल कर दिया। उसने तुरंत कहा–"अच्छा चलो।"

सेठजी सहारा देकर उसे बाहर लाए और फिटन पर बिठा दिया। फिटन घर की ओर दौड़ने लगी। उस समय सेठजी और अंधी भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। दोनों की यही इच्छा थी कि शीघ्र अपने बच्चे के पास पहुँच जाएँ। कोठी आ गई, सेठजी ने सहारा देकर अंधी को उतारा और अंदर ले गए। भीतर जाकर अंधी ने मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन पहचान गया कि यह उसकी माँ का हाथ है। उसने तुरंत नेत्र खेल दिए और उसे अपने पास खड़ा देखकर कहा–"माँ! तुम आ गई!"[15]

इस चक्षु दिव्यांग महिला में इतनी महत्व की भावना भरी हुई थी कि उसका स्पर्श पाते ही सेठ का खोया हुआ बीमार पुत्र उठ बैठा–''अंधी भिखारिन मोहन के सिरहाने बैठ गई और उसने मोहन का सिर अपनी गोद में रख लिया। उसको बहुत सुख अनुभव हुआ और वह उसकी गोद में तुरंत सो गया।''[16]

चक्षु दिव्यांग होने के बावजूद भी इस वृद्धा को अपनी क्षमता पर पूरा विश्वास था और उसे अपने आत्म सम्मान की भी फिक्र थी। जब बच्चा ठीक हो गया तो सेठ ने वृद्धा को अपने घर पर ही रुकने के लिए कहा, क्योंकि सेठ वृद्धा के प्रति किए गये अपने व्यवहार से बहुत शर्मिन्दा था और अपराध बोध कर रहा था–''दूसरे दिन से मोहन की दषा अच्छी होने लगी और दस–पंद्रह दिन में ही वह बिलकुल स्वस्थ हो गया, जो काम हकीमों के जोशान्दे, वैद्यों की पुड़िया और डॉक्टरों के मिक्सचर न कर सके, वह अंधी की स्नेहमयी सेवा ने पूरा कर दिया।

मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अंधी ने विदा माँगी। सेठजी ने बहुत कुछ कहा–सुना कि वह उन्हीं के पास रह जाए, परंतु वह सहमत न हुई, विवश होकर उसे विदा करना पड़ा। जब वह चलने लगी तो सेठजी ने रूपयों की एक थैली उसके हाथ में दे दी। अंधी ने मालूम किया–"इसमें क्या है?"

सेठजी ने कहा–"इसमें तुम्हारी धरोहर है, तुम्हारे रुपये। मेरा वह अपराधकृ?"[17]

यह चक्षु दिव्यांग महिला सेठ से भी अधिक धनी निकली क्योंकि उसके पास इस प्रकार के उदात्त और नैसर्गिक गुणों का खजाना था। जो दुनिया में बहुत कम लोगों के पास होता है और वह त्याग की महिमा मूर्ति भी थी। चक्षु–दिव्यांग होने के बावजूद भी वह किंचित भी स्वार्थी नहीं थी। क्योंकि उसने भीख मांगकर जो भी पैसा इकट्ठा किया था वह उसे लड़के के लिए ही किया था। जिसे उसने अपनी झोपड़ी के पास सात वर्ष पहले रोता हुआ पाया था। वह चक्षुविहीन होने को बावजूद भी इतनी निपुण थी कि उसे अपने ऊपर भरोसा था कि वह मरते दम तक अपने जीवन को जीने के लिए किसी न किसी प्रकार थोड़ा बहुत धन अवश्य अर्जित कर लेगी। तभी उसने धन की पोटली सेठ को वापस करते हुए कहा–''अंधी ने बात काटकर कहा–"यह रुपये तो मैंने तुम्हारे मोहन के लिए संग्रह किए थे, उसी को दे देना।"

अंधी ने थैली वहीं छोड़ दी और लाठी टेकते हुए चल दी। बाहर निकलकर फिर उसने उस घर की ओर नेत्र उठाए, उसके नेत्रों से आँसू बह रहे थे, लेकिन वह एक भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी। इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।''[18]

इस रचना को पढ़ते हुए महादेवी वर्मा की रचना 'गुंगिया' का भी ध्यान आ जाता है। उस रचना में गुंगिया नाम की महिला पात्रा थी उसमें भी नायिकोचित गुण थे। गुंगिया अपनी बहन के बच्चे को इतना प्रेम करती थी जितना की रविन्द्रनाथ टैगोर की इस रचना में यह चक्षु दिव्यांग वृद्धा उस सेठ को खोए हुए लड़के को अतः दोनों में बहुत कुछ समानता है।

अतः हम कह सकते है कि इस शोध पत्र के माध्यम से मैंने रविन्द्रनाथ टैगोर की इस रचना 'भिखारिन' में दिव्यांग तत्वों की खोज करने की कोशिश की है और किस हद तक मैं सफल हुआ इसका निर्णय पाठक करेंगे।

सन्दर्भ सूची

1. अनमोल भेंट, रविन्द्रनाथ टैगोर की कहानियां, रविन्द्रनाथ टैगोर, कान्हा पब्लिषिंग हाउस, गांधी नगर, लक्ष्मी सागर, (पो.) दरभंगा बिहार–846009, पृष्ठ संख्या–13
2. वही, पृष्ठ संख्या–132
3. वही, पृष्ठ संख्या–132–133
4. वही, पृष्ठ संख्या–133
5. वही, पृष्ठ संख्या–134
6. वही, पृष्ठ संख्या–134
7. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय, भारत सरकार का गजट, 2005, पृष्ठ–1, 3, 4, 7
8. वही, पृष्ठ संख्या–135
9. वही, पृष्ठ संख्या–135–136
10. वही, पृष्ठ संख्या–136
11. वही, पृष्ठ संख्या–136
12. वही, पृष्ठ संख्या–136
13. वही, पृष्ठ संख्या–136
14. वही, पृष्ठ संख्या–137
15. वही, पृष्ठ संख्या–137
16. भिखारिन, पृष्ठ–137
17. भिखारिन, पृष्ठ–137
18. गुंगिया, महादेवी वर्मा, पृष्ठ–37

सह–आचार्य
डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज,
कला संकाय, हिन्दी/पत्राकारिता विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
08800270471
Email : ommishradu2@gmail.com